शिवजी की आरती ।

आम् जय शिव ओंकाराम स्वामी जय शिव ओंकारा ।
ब्रह्मा-विष्णु सदाशिव अर्धाङ्गी धारा ।। ओम् जय हरहर महादेवा ।।

एकानन चतुरानन पंचानन राजै ।
हंसानन गरुडासन, वृषवाहन साजे ।। आम् जय हरहर महादेवा ।।

दो भुज चारु चतुर्भुज दशभुज ते सोहे ।
तीनों रुप निरखता त्रिभुवन जन मोहै ।। ओम् जय हरहर महादेवा ।।

अक्षमाला बनमाला मुण्डमालाधारी ।
चन्दन मृगमद सोहै, भाले शशिधारी ।। आम् जय हरहर महादेवा ।।

श्वेताम्बर पिताम्बर बाधम्बर अंगे ।
सनकादिक ब्रह्मादिक भूतादिक संगे ।। आम् जय हरहर महादेवा ।।

करमध्ये कमण्डलु चक्र त्रिशूल धर्ता ।
जग-हर्ता जग-भर्ता जग पालनकर्ता ।। ओम् जय हरहर महादेवा ।।

ब्रह्मा विष्णु सदाशिव जानत अविवेका ।
प्रणवाक्षर के मध्ये ये तीनों ही एका ।। आम् जय हरहर महादेवा ।।

त्रिगुण शिव की आरती जो कोई नित ध्यावे ।
कहत शिवानन्द स्वामी मनवाञ्छित फल पावे ।। ओम् जय हरहर महादेवा ।।